पाठ-17

तीर्थ-यात्रा

– सुदर्शन

आइए सीखें

■ जीवन-मूल्यों से परिचय ■ सामाजिक-परिवेश की विभिन्न स्थितियाँ ■ मानव-सेवा के गुणों का विकास ■ वाक्यांशो के लिए एक शब्द ■ विराम चिह्न।

हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों जैसा ही था, मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में कोई न था। माँ की ममता ने उसकी आँखों को धोखे में डाल दिया था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए फिरती थी। मानो वह कोई दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी; कहीं उसे किसी की नज़र न लग जाए। सबके लड़के प्राय: खेतों में खेलते-फिरते हैं; मगर लाजवंती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी। अगर वह कभी निकल भी जाता तो लाजवंती घबराकर ढूँढ़ने लग जाती थी; और उसके मन में भय बैठ जाता था। मगर इतना सावधान रहने पर भी हेमराज बुरी नज़र से न बच सका। प्रात:काल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला-''माँ।''

आवाज में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बर्तन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली—''क्यों हेम! क्या है बेटा? घबराया हुआ क्यों है तू? इस तरह क्यों बोलता है तू?''

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए; रुक-रुककर बोला—''सिर में दर्द होता है-बहुत दर्द

शिक्षण संकेत

▸ कक्षा में छात्रों से कहानी का वाचन कराएँ ▸ कहानी का महत्व समझाएँ ▸ कहानी के मुख्य पात्रों के बारे में बताते हुए कहानी का सार छात्रों से पूछें ▸ संकेतों के आधार पर कहानी लिखवाएँ ▸ जीवन मूल्यों से संबंधित अन्य प्रेरक कहानियाँ सुनाएँ।

होता है।''

बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन नहीं रहा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।

लाजवंती को पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। जिस तरह विद्यार्थी एक-बार असफल होकर दूसरी बार परीक्षा में बैठते समय घबराता है, उसी तरह हेमराज के सिर दर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई।

गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें लुकमान समझते थे। सैकड़ों रोगी उनकी दवा से स्वस्थ होते थे। आस-पास के गाँवों में भी उनका बड़ा नाम था। लाजवंती उड़ती हुई उनके पास पहुँची।

वैद्यजी बैठे एक पुराना साप्ताहिक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। लाजवंती को देखकर उन्होंने पत्र हाथ से रख दिया और आँखों से ऐनक उतारकर बोले—''क्यों बेटी? क्या बात है?''

लाजवंती ने चिंतित-सी होकर उत्तर दिया—''हेम बीमार है।''

वैद्यजी ने सहानुभूति के साथ पूछा—''कब से?''

''आज ही से। कहता है, सिर में दर्द है।'' लाजवंती बोली!

''बुखार तो नहीं?'' वैद्य ने पूछा—

''मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते तो अच्छा था।'' लाजवंती बोली।

वैद्य ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और फिर कहा—''कोई चिंता नहीं। दवा दे देता हूँ, बुखार उतर जाएगा।''

लाजवंती के डूबते हृदय को सहारा मिल गया।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्यजी ने कई दवाइयाँ बदलीं; परंतु किसी ने अपना असर नहीं दिखाया। लाजवंती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रात भर उसके सिरहाने बैठी रहती। लोग आते और धीरज देकर चले जाते थे। मगर लाजवंती का मन उनकी बातों की ओर न दौड़ता था। डरी-डरी रहती और अपने मन की पूरी शक्ति से हेम की सेवा में लगी रहती थी।

एक दिन उसने वैद्यजी से पूछा—''आखिर क्या बात है, जो यह बुखार उतरने का नाम नहीं लेता?''

वैद्यजी ने उत्तर दिया—''मियादी बुखार है।''

लाजवंती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा—''मियादी बुखार क्या?''

''अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।''

''पर कब तक उतरेगा?''

''इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।''

''आज ग्यारह दिन तो हो गए हैं।''

''बस दस दिन और हैं। किसी तरह ये दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।''

लाजवंती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली—''कोई अंदेशा तो नहीं? सच-सच बता दीजिए।''

वैद्यजी थोड़ी देर चुप रहे। इस समय वह सोच रहे थे कि उसे सच-सच बताएँ या न बताएँ? आखिर बोले—''देखो! बुखार सख्त है; हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।''

उसका पति रामलाल मुल्तान में नौकर था। उसने उसे तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगुनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। लाजवंती और रामलाल दोनों घबरा गए। सोचने लगे, क्या बुखार एकाएक उतरेगा?

वैद्य ने आकर नाड़ी देखी, तो घबराकर बोले—''आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना-बुखार एकाएक उतरेगा।''

लाजवंती मंदिर पहुँची, और देवी के सामने गिरकर देर तक रोती रही। जब थककर उसने सिर उठाया तो उसका मुख-मंडल शांत था, जैसे तूफान शांत हो आता है। उसको ऐसा मालूम हुआ, जैसे कोई दिव्य-शक्ति उसके कान में कह रही है-तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर दिया है। लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मानता मानी—''देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थ-यात्रा करूँगी।''

यह मानता मानने के बाद लाजवंती को ऐसा जान पड़ा, जैसे उनके दिल पर से किसी ने कोई बोझ हटा लिया है, जैसे उसका संकट टल गया है। उसे निश्चय हो गया कि अब हेम को कोई भय नहीं है। लौटी तो उसके पाँव भूमि पर न पड़ते थे। उसके हृदय-समुद्र में आनंद की तरंगें उठ रही थीं। वह दौड़ती हुई घर पहुँची तो पति ने कहा—''बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया! बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।''

लाजवंती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली—''अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थ-यात्रा की मानता मान आई हूँ।''

रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया तो हृदय बैठ गया। परन्तु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक ठहरने न दिया। उत्तर दिया—''अच्छा किया। रुपये का क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।'' लाजवंती ने स्वामी को सुला दिया और आप रात भर जागती रही।

प्रभात हुआ तो हेम का बुखार बिलकुल उतर गया था। लाजवंती के मुख-मंडल से प्रसन्नता टपक रही थी; जैसे संध्या के समय गौओं के स्तनों से दूध की बूँदें टपकने लगती हैं।

वैद्यजी ने आकर देखा, तो उनका मुँह भी चमक उठा। अभिमान से सिर उठाकर बोले—''अब कोई चिंता नहीं। तुम्हारा बच्चा बच गया।''

लाजवंती ने हेम की कमजोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा—''क्या-से-क्या हो गया है?''

वैद्य ने लाजवंती की ओर देखा और रामलाल से बोले—''यह सब इसी के परिश्रम का फल है।''

लाजवंती ने उत्तर दिया—''देवी माता की कृपा है अथवा आप की दवा के प्रभाव का फल है। मैंने क्या किया है, जो आप कहते हैं कि यह मेरे परिश्रम का फल है?''

''मैं तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को जिलाया था तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है। तुम यदि दिन-रात एक न कर देतीं तो हेम का बचना असंभव था। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है। बच्चा बचा नहीं है, दूसरी बार पैदा हुआ है।''

रामलाल के होठों पर मुस्कराहट थी, आँखों में चमक। इसके सातवें दिन वह नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो।

तीन महीने बीत गए। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुई। अब उसके मुख पर फिर वही आभा थी, आँखों में फिर वही चमक, दिल में फिर वही खुशी। हेम आँगन में इस तरह चहकता फिरता था, जैसे फूलों पर बुलबुल चहकती है। लाजवंती उसे देखती थी तो फूली न समाती थी।

तीर्थ-यात्रा पर जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थी। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं और शोर मचाती थीं। दूसरी तरफ कहीं पूरियाँ बन रही थीं, कहीं हलुआ। उनकी सुगंध से दिमाग तर हुए जाते थे। लाजवंती उधर-से-इधर दौड़ती-फिरती थी, मानो उसके यहाँ ब्याह हो।

सहसा किसी की सिसकी भरने की आवाज सुनाई दी। लाजवंती के कान खड़े हो गए। उसने चारों तरफ देखा, मगर कोई न दिखा। इस समय सारा गाँव सुख-स्वप्न में बेसुध पड़ा था। इस समय यह सिसकी भरने वाला कौन है? यह सोचकर लाजवंती हैरान रह गई। वह आँगन में निकल आई और ध्यान से सुनने लगी। सिसकी की आवाज फिर सुनाई दी।

लाजवंती छत पर चढ़ गई और पड़ोसिन के आँगन में झुककर ज़ोर से बोली—''माँ हरो!'' कुछ देर सन्नाटा रहा। फिर एक चारपाई पर से उत्तर मिला—''कौन है? लाजवंती?'' आवाज़ में रोने के स्वर मिले हुए थे।

लाजवंती जल्दी से नीचे उतर गई और हरो के पास पहुँचकर बोली—''माँ, क्या बात है? तू रो क्यों रही है?''

हरो सचमुच रो रही थी; परंतु अपनी वास्तविक अवस्था को छिपाती हुई बोली—''कुछ बात नहीं।''

''तू रो क्यों रही है?'' लाजवंती ने फिर पूछा।

हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया। उसका दुखी हृदय सहानुभूति की एक चोट को भी सहन न कर सका। वह और भी सिसकियाँ भर-भरकर रोने लगी।

लाजवंती ने फिर पूछा—''अरी! बात क्या है, जो तू इस समय रो रही है? मैं तेरी पड़ोसिन हूँ, मुझसे न छिपा।''

हरो ने कुछ उत्तर न दिया। वह सोच रही थी कि इसे बताऊँ या न बताऊँ?

हरो थोड़ी देर चुप रही फिर धीरे से बोली—''कुँआरी बेटी का दुख खा रहा है; रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नाव कैसे पार लगेगी?''

''यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च तो तुम्हारे जेठ ने देना मंजूर कर लिया है।''

''ऐसे भाग होते तो रोना काहे का था?''

लाजवंती ने अकुलाकर पूछा—''तो क्या यह झूठ है?''

''बिलकुल झूठ भी नहीं। उसने दो सौ रुपये के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं, मगर मिठाई, भोजन आदि का प्रबंध नहीं किया।

लाजवंती हरो की अवस्था देखकर काँप गई। वह अपने आपको भूल गई। उसका हृदय दुख से पानी-पानी हो गया। उसने जोश में कहा—''चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तेरी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी तेरी ही बेटी नहीं मेरी भी है।''

हरो ने वह सुना , जिसकी उसे इच्छा थी, परंतु आशा न थी। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी-हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर के अंदर गई और संदूक से दौ सौ रुपये लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। यह रुपये जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी, पर उन्हें देते समय उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ?

शब्दार्थ

वैद्य=जड़ी-बूटियों के द्वारा इलाज करने वाला, आयुर्वेद पद्धति से इलाज करने वाला। **रोगी**=बीमार। **पाषाण**=पत्थर। **परिश्रम**=मेहनत। **व्याकुल**=चिंतित। **मनोरथ**=मन की इच्छा। **कल्पित**=कल्पना में। **कोप**=क्रोध। **कृतज्ञता**=उपकार मानना। **आभा**=चमक। **तार**=टेलीग्राम (एक प्रकार का संदेश भेजने वाला पत्र)। **ग्रहण**=स्वीकार, अपनाना, लेना। **प्रभात**=सबेरा।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- समाचार – चहकना
- मुख – तीर्थ स्थल
- बुलबुल – मंडल
- हरिद्वार – पत्र

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- लाजवंती का ..... हृदय काँप गया। (नारी/कोमल)
- वैद्य जी बैठे एक पुराना..... समाचार पत्र पढ़ रहे थे। (मासिक/साप्ताहिक)

- मंदिरों को देखकर हृदय..... की तरह खिल जाएगा। (कमल/कली)
- जो सुख त्याग में है वह ..... में कहाँ? (ग्रहण/वरण)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) मियादी बुखार किसे कहते हैं?

(ख) 'लुकमान' शब्द का प्रयोग लेखक ने किसके लिए किया है?

(ग) लाजवंती तीर्थयात्रा के लिए कहाँ-कहाँ जा रही थी?

(घ) लाजवंती क्यों अधीर हो रही थी?

(ङ) रामलाल ने अपनी दौलत किसे कहा है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) लाजवंती को पैरों के नीचे से धरती खिसकती सी क्यों लगी?

(ख) लाजवंती मंदिर क्यों गई?

(ग) ''त्याग करने में ही सुख है''-इस पंक्ति का क्या आशय है?

(घ) लेखक ने रुपये को हाथ का मैल क्यों कहा है?

(ङ) लाजवंती तीर्थ-यात्रा पर क्यों नहीं जा सकी?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

परीक्षा, सहानुभूति, दिव्य-शक्ति, परिश्रम

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

सप्तहीक, परिकमा, समुद, प्रसननता

6. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए—

- सप्ताह में एक दिन प्रकाशित –
- विद्या अध्ययन करने वाला –
- आयुर्वेद पद्धति से चिकित्सा करने वाला –
- पड़ोस में रहने वाली –

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

वह दौड़ती हुई <u>अपने</u> घर के <u>अन्दर</u> गई और संदूक में से दो सौ रुपये लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। यह रुपये जमा करते समय वह <u>प्रसन्न</u> हुई थी, पर उसे देते समय उससे भी <u>अधिक</u> प्रसन्नता

हुई। जो सुख त्याग में है वह ग्रहण में कहाँ?

शब्द		विलोम शब्द
अन्दर	–	बाहर
.....	–	.....
.....	–	.....

8. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर रेखांकित शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कर लिखिए—
उस गाड़ीवान का बचपन बहुत ही अभाव में बीता। वह बहुत अच्छा कलाकार था उसकी यह अच्छाई थी कि वह स्वभाव से बहुत नम्र था। उसने पढ़ाई, लिखाई नहीं की थी; किन्तु वह बहुत अच्छे फूलदान बनाता था।

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
गाड़ीवान	गाड़ी	वान
.....	.....	.....
.....	.....	.....

9. **निम्नलिखित गद्यांश में विराम चिह्न लगे हैं, उन चिह्नों को पहचानकर उनका नाम लिखिए—**
रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया, तो हृदय बैठ गया। परन्तु पुत्र-स्नेह ने इस चिन्ता को देर तक ठहरने न दिया—''अच्छा किया! रुपये का क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।'' लाजवंती ने स्वामी को सुला दिया और आप रातभर जागती रही। लाजवंती ने पुत्र हेम के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—''क्या से क्या हो गया है?''

10. **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—**
आँसू, पैर, हाथ, धीरज, आग, मुँह, नाव, जेठ।

11. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग और मूलशब्द लिखिए—**
परिश्रम, अनुभव, अनुमान, अभिमान, सफल, प्रभाव, सुगंध, अपमान।

अब करने की बारी

- मानवीय मूल्यों से संबंधित प्रेरक प्रसंगों की जानकारी शिक्षक की सहायता से प्राप्त कीजिए।
- त्याग करने में यदि आपको कभी कोई सुख मिला हो तो अपने अनुभव अपने साथियों से बाँटिए।

❑❑